आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका।

आत्म-प्रकाश

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

वर्ष : 02 | अंक : 06 | सितम्बर 2012 | विक्रम संवत् 2069

आशीर्वाद
प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी)

☆

सम्पादक
कैलाश चन्द्र श्रीमाली

☆

संयोजक
विनीत श्रीमाली

☆

प्रकाशक एवं स्वामित्व
कैलाश चन्द्र श्रीमाली
प्राचीन मंत्र-यंत्र विज्ञान

☆

मुद्रक
'सुदर्शन प्रिन्टर्स'
487/505, पीरागढ़ी,
रोहतक रोड, नई दिल्ली-87
से मुद्रित

☆

कार्यालय :
प्राचीन मंत्र-यंत्र विज्ञान
1-सी पंचवटी कॉलोनी,
रातानाडा, जोधपुर
से प्रकाशित

मूल्य भारत में
एक प्रति : 24/-
वार्षिक : 310/-

सम्पादक की कलम से .....

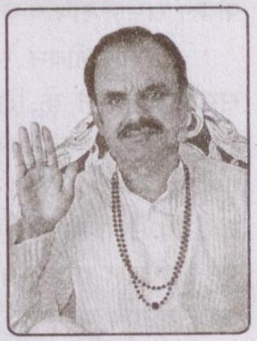

अपनो से अपनी बात

प्रिय आत्मन,

शुभाशीर्वाद!

परमात्मा की खोज कोई दार्शनिक नहीं है। परमात्मा की खोज कोई सैद्धान्तिक खोज नहीं है। वह तो प्राणी की पुकार है। जैसे प्यासा पानी के लिए तड़पता ऐसी तड़प चाहिए, जैसे भूखा भोजन के लिए तड़पता है ऐसी तड़प चाहिए। किताबों को पढ़-पढ़कर, सुंदर-सुंदर शब्दों को कण्ठस्थ करके कोई गुरु या परमात्मा तक नहीं पहुंच सकता। परमात्मा तक पहुंचने के लिए तो तीव्र बेचैनी चाहिए।

ठीक इसी प्रकार की दशा आप की है। आप भी बाजार की रंगबिरंगी दुकानों में फैल गए हो। बीबी, बच्चे रूपी जादू देखने लगे हो। आज बच्चे से ज्यादा बड़े मनोरंजन के खेल में उलझ गए है। इसलिए जरा गौर से देखों तो आपका हाथ भी परमात्मा के हाथ से छूट गया है। जब यह एहसास हो जाएगा कि आपका हाथ परमात्मा के हाथ में नहीं है, तो उसी क्षण सब रंगरंगियां खो जाएं। उसी क्षण सारा मनमोहक बाजार व्यर्थ दिखने लगे। उसी क्षण सारे संसार का सुख खो जाए और तो आप उस परमात्मा की खोज में निकल पड़ेगे।

क्योंकि जिस क्षण व्यक्ति को पता चल जाता है कि मेरा हाथ गुरु रूपी परमात्मा के हाथ से छूट गया है, कि तब उसे हृदय से एक प्रगाढ़ अभिप्सा उठती है उस हाथ को फिर से पा लेने की। क्योंकि उस हाथ के बिना न तो जीवन में कोई रस हो सकता है और न ही जीवन जीने की

सार्थकता हो सकती है।

अभी आप जिसे जीवन कहते हो, वह जीवन नहीं है, जीवन का मात्र धोखा है। यदि आप अपने इस जीवन को जीवन कहते हो तो फिर राम, महावीर, बुद्ध, कबीर, नानक शंकराचार्य का जीवन क्या था ? जरा विचार करो ! जब आपके जीवन में आशा की कोई किरण नहीं है, गुरु रूपी चिन्तन भाव की हृदय पर कोई रेखा नही है तो खोजो उस अदृश्य शक्ति को जिसके कारण आप जी रहे हो। खोजो अपने आप को जब अपने आप को खोजने की क्रिया और चिन्तन प्रारम्भ कर लेगे उस क्षण से ही अपने गुरु के प्रति इष्ट के प्रति परमात्मा के प्रति प्रेम भाव जाग्रत हो सकेगा। तब जीवन के हर अर्थ को हम सही रूप में न केवल समझ सकेंगे वरन पूर्णता से जीवन के अर्थ सार को प्राप्त कर सकेंगे।

इसी जीवन सार को सही रूप में साधक और शिष्य के भाव चिन्तन में पूर्णता से समाहित करने के लिए सद्गुरुदेव नारायणदत श्रीमालीजी ने इस धरा पर आकर जो हमको चिन्तन और भाव दिया है उस चिन्तन से लाखों-लाखों शिष्यों ने सही रूप में अपने जीवन को पूर्णता के साथ जिया है और यह क्रिया जो सद्गुरुदेव जी ने प्रारम्भ की थी उसमें कहीं विराम न आये उसी के फलस्वरूप आप जैसे समर्पित साधकों शिष्यों और कार्यकर्ताओं के सहयोग से यह अविरल यात्रा निरन्तर निरन्तर जारी है और आगे भी इसमें और अधिक चेतना का भाव आ सकेगा। क्योकि जिस तरह से भक्त के बिना भगवान अधूरा है ठीक उसी तरह से शिष्य के बिना गुरु की महता नहीं रहती है।

पूरे भारत वर्ष में शिविरों की जो श्रृंखला प्रारम्भ की गई है उन शिविरों के माध्यम से सिद्धाश्रम साधक परिवार के साधकों में यह चेतना और आत्मतत्व का भाव जाग्रत हुआ है कि वे संसार में अकेले नहीं है उन्हें बराबर चेतना और ऊर्जा तथा निरन्तर निरन्तर प्रगति का भाव चिन्तन गुरु के माध्यम से प्राप्त हो रहा है और न केवल चिन्तन ही वरन जीवन को सही रूप में सभी आयामों को किस प्रकार से प्राप्त करना है। यह चेतना और चिन्तन अविरल रूप से आत्मसात हो रही है और इसके माध्यम से जीवन के अनेक झंझावतों से पार पाने की क्रिया और चिन्तन प्राप्त हो रहा है, इन सभी आयामों को प्राप्त करने में गुरु तो अपने रक्त का कण-कण शिष्य में ज्ञान साधना और चिन्तन के माध्यम से समाहित कर रहा है परन्तु विशेष रूप से उससे भी अधिक साधक और शिष्य पूर्ण चेतना भाव से अपने आप को चेतन और जाग्रत रख रहे है।

नित्य पूजा के बाद पांच मिनिट विचार करे कि मैंने गुरु की चेतना और ज्ञान रूपी मशाल को कितना अधिक अपने ही क्षेत्र में जाज्वल्यमान किया है और उसमें मैं अपनी तरफ से कितना तेल अर्पित कर रहा हूं जिससे कि इस मशाल के माध्यम से और अधिक मेरे संसार में अंधकार समाप्त हो सके।

शारदीय नवरात्री महापर्व पर आपको ऐसी ही शक्ति और चेतना प्रदान करता हूं। जिससे आप ज्ञान रूपी ज्योति को और अधिक विस्तृत रूप दे सकें।

आपका अपना
कैलाश चन्द्र श्रीमाली